प्लास्टिक मुक्त भारत

आप सब जानते हैं कि इंसान ने अपनी सुविधा के लिए ढेरों ऐसी चीजें बनाई, जो आगे चलकर उसी के लिए जी का जंजाल बन गईं. पॉलिथीन की थैलियां भी उन्हीं में से एक हैं. आज कल प्लास्टिक का उपयोग हर जगह हो रहा है जिसके कारण मानव प्रकृति के अनुदान उसे लाभान्वित होता गया उसके लोग में बढ़ोतरी होती गई प्रकृति का ख्याल रखे बगैर कई माननीय गतिविधियों से ऐसे आविष्कार किए जिससे प्रकृति को नुकसान होना शुरू हुआ नतीजा प्रकृति के नाम पर मानव ने प्रकृति में बहुत ज्यादा हस्तक्षेप किया इस भयंकर आविष्कारों में एक प्लास्टिक को भले ही मानव का आविष्कार क्यों ना मानी लेकिन यही प्लास्टिक उसकी प्रकृति का सबसे बड़ा शत्रु बनकर उसे प्रदूषित कर रहा है जिस प्रकृति ने हमारे पूर्वजों को एक अच्छा वातावरण दिया और आगे भी यह प्रकृति हमें तथा हमारी भावी पीढ़ियों को अच्छा वातावरण देने में तत्पर है मगर ना जाने प्लास्टिक प्रदूषण से हम प्रकृति का गला घोटने को उतारू क्यों है।

दिन की शुरूआत से लेकर रात में बिस्तर में जाने तक अगर ध्यान से गौर किया जाए तो आप पाएंगे कि प्लास्टिक ने किसी न किसी रूप में आपके हर पल पर कब्जा कर रखा है।टूथब्रश से सुबह ब्रश करना हो या ऑफिस में दिन भर कम्प्यूटर पर काम,बाजार से कोई सामान लाना हो या टिफिन और वॉटर बॉटल में खाना और पानी लेकर चलना। प्लास्टिक हर जगह है, हर समय है।

दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, उत्तर प्रदेश और चेन्नई जैसे बड़े शहरों में तो इनसे होने वाले नुकसान को लेकर सरकार और कुछ हमारे जैसे समाजसेवी संस्थानों ने जागरूकता अभियान भी चलाए हैं, पर बी ग्रेड और उससे नीचे के शहर, कस्बों यहां तक कि गांवों में भी आपको लाल, पीली, हरी, नीली थैलियां हर जगह दिखाई दे जाएंगी, चाहे वह किराने की दुकान हो, बड़े सुपरबाजार हों, या सब्जी मंडी हो..यह थैलियां जहां

हमारे पर्यावरण के लिए घातक हैं, वहीं हमारे स्वास्थ्य पर भी इनका बुरा असर पड़ता है. आलम यह है कि कम पढ़े-लिखे लोगों को तो छोड़िए, आज का पढ़ा-लिखा इनसान भी सब कुछ जानते हुए भी पॉलिथीन की थैलियों के प्रयोग से गुरेज नहीं करता है.

पूरे विश्व में प्लास्टिक का उपयोग इस कदर बढ़ चुका है और हर साल पूरे विश्व में इतना प्लास्टिक फेंका जाता है कि इससे पूरी पृथ्वी के चार घेरे बन जाएं। प्लास्टिक केमिकल बीपीए शरीर में विभिन्न स्त्रोतों से प्रवेश करता है। अरबों पाउंड प्लास्टिक पृथ्वी के पानी स्त्रोतों खासकर समुद्रों में पड़ा हुआ है। 50 प्रतिशत प्लास्टिक की वस्तुएं हम सिर्फ एक बार काम में लेकर फेंक देते हैं।प्लास्टिक को पूरी तरह से खत्म होने 500 से 900 साल तक लगते हैं।

हम जो कचरा फैंकते हैं उसमें प्लास्टिक का एक बड़ा हिस्सा होता है। पृथ्वी पर सभी देशों में प्लास्टिक का इस्तेमाल इतना बढ़ चुका है कि वर्तमान में प्लास्टिक के रूप में निकलने वाला कचरा विश्व पर्यावरण विद्वानों के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। विकसित देश अक्सर भारत जैसे विकासशील या अन्य विभिन्न अविकसित देशों में इस तरह का कचरा भेज देते हैं। अथवा ऐसे कचरे को जमीन में भी दबा दिया जाता है। जमीन में दबा यह कचरा पानी के स्त्रोतों को प्रदूषित कर हमारे जीवन के लिए बड़े खतरे के रूप में सामने आता है। प्लास्टिक की चीजें, जितनी भी आप सोच सकते हैं, अक्सर ही पानी के स्त्रोतों में बहुत ज्यादा मात्रा में पड़ी मिलती हैं।

प्लास्टिक नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल होता है। नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल ऐसे पदार्थ होते हैं जो बैक्टीरिया के द्वारा ऐसी अवस्था में नहीं पहुंच पाते जिससे पर्यावरण को कोई नुकसान न हो। कचरे की रिसायकलिंग बेहद जरूरी है क्यों कि प्लास्टिक की एक छोटी सी पोलिथिन को भी पूरी तरह से छोटे पार्टिकल्स में तब्दील होने में हजारों सालों का समय लगता है और इतने ही साल लगते हैं प्लास्टिक की एक छोटी सी पोलिथिन को गायब होने में।

जब प्लास्टिक को कचरे के तौर पर फेंका जाता है यह अन्य चीजों की तरह खुदबखुद खत्म नहीं होता। जैसा कि हम जानते हैं इसे खत्म होने में हजारों साल लगते हैं यह पानी के स्त्रोतों में मिलकर पानी प्रदुषित करता है।

प्लास्टिक बैग्स बहुत से जहरीले केमिकल्स से मिलकर बनते हैं। जिनसे स्वास्थ्य और पर्यावरण को बहुत हानि पहुंचती है। प्लास्टिक बैग्स बनाने में जायलेन, इथिलेन ऑक्सा इड और बेंजेन जैसे केमिकल्स का इस्तेमाल होता है। इन केमिकल्स स बहुत सी बीमारियां और विभिन्न प्रकार के डिसॉडर्स हो जाते हैं। प्लास्टिक के केमिकल पर्यावरण के लिए भी बेहद हानिकारक होते हैं जिससे इंसान, जानवरों, पौधों और सभी जीवित चीजों को नुकसान पहुंचाते हैं। प्लास्टिक को जलाने और फेंकने पर जहरीले केमिकल्स का उत्सर्जन होता है।

कुछ विकसित देशों में प्लास्टिक के रूप में निकला कचरा फेंकने के लिए खास केन जगह जगह रखी जाती हैं। इन केन में नॉन-बॉयोडिग्रेडेबल कचरा ही डाला जाता है। असलियत में छोटे से छोटा प्लास्टिक भले ही वह चॉकलेट का कवर ही क्यों न हो बहुत सावधानी से फेंका जाना चाहिए। क्यों कि प्लास्टिक को फेंकना और जलाना दोनों ही समान रूप से पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंचाते हैं। प्लास्टिक जलाने पर भारी मात्रा में केमिकल उत्सर्जन होता है जो सांस लेने पर शरीर में प्रवेश कर श्वसन प्रक्रिया पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। इसे जमीन में फेंका जाए या गाड़ दिया जाए या पानी में फेंक दिया जाए, इसके हानिकारक प्रभाव कम नहीं होते।

पॉलिथीन से होने वाले नुकसान के मद्देनजर 'स्वच्छ भारत' संगठन देश के तमाम हिस्सों में एक साथ अभियान चला कर लोगों को जागरूक करने का काम कर रहा है. इसी सिलसिले में उत्तर प्रदेश, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के धामपुर, बिजनौर, नगीना और धनौरा मंडी में 'स्वच्छ भारत' की टीम ने जगह-जगह नुक्कड़ सभाएं कर और डोर टू डोर जाकर लोगों को पॉलिथीन का प्रयोग छोड़ने और जूट और कपड़े के झोलों का प्रयोग करने के लिए जागृत किया. लोगों को बताया पॉलिथीन क्या है, और इससे पर्यावरण, धरती और इनसान तो क्या जीव- जंतुओं तक पर कितना बुरा असर पढ़ता है|

देखते ही सही शुरुआत तो हुई आज भारत इस समस्या को समाप्त करने में थोड़ी गंभीरता की झलक देखने को मिली कई राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश में प्लास्टिक के कुछ विशिष्ट उत्पादों के प्रयोग को गैरकानूनी घोषित कर इसके प्रयोग को कम करना शुरू किया।

विश्व पर्यावरण दिवस पर भारत में हुए कार्यक्रमों को ऐतिहासिक बताते हुए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण प्रमुख एरिक सोलहेम इसके लिए भारत की प्रशंसा की है। उन्होंने कहा है कि भारत ने एक बाहर के इस्तेमाल के बाद फेंक दिए जाने वाले प्लास्टिक को 2022 तक समाप्त की घोषणा कर वैश्विक नेतृत्व और पर्यावरण के प्रति गंभीरता दिखाई है। मगर भारत को इन बड़ी-बड़ी घोषणाओं और वादों के स्थान पर अपनी प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करने की कोशिशों पर भी जोर देना होगा।

लिखने वाले ने भी क्या बात लिखी है कि " वादे तो अक्सर टूट जाया करते हैं लेकिन कोशिशें कामयाब हो जाया करती हैं।"

वहीं दूसरी ओर भारत में इस प्रदूषण को समाप्त करने की कोशिश यहां तक कि रही है कि आमतौर पर प्लास्टिक को या तो गड्ढे में भर दिया जाता है या इसे जला कर खत्म कर दिया जाता है। मगर दोनों प्रदूषित तरीके हैं गड्ढे में दबाने पर वहां की जमीन बंजर हो जाती है और इसे जलाने से वायु में जहरीली गैसों से वायु प्रदूषित होता है इन बेकार की कोशिशों से परे एक बड़ी कोशिश यह होनी चाहिए कि हम दिनचर्या व जीवनशैली को बदल प्लास्टिक पर निर्भरता कम करें और प्लास्टिक की जगह अन्य विकल्पों को अपनाएं जो विकल्प प्रकृति के अनुकूल हो।

निसंदेह भारत ने इस प्रदूषण को समाप्त करने के लिए कुछ कदम उठाए हैं जैसे कई राज्यों में वशिष्ठ प्लास्टिक प्रयोग को गैरकानूनी मानना और सरकार व आम जनता का इस प्रदूषण को समाप्त करने की गंभीरता दिखाई देना धीरे-धीरे प्रयास ही सही मगर इन प्रयासों को निरंतर रखना जरूरी है क्योंकि भले ही बारिश की बूंदे छोटी-छोटी क्यों ना हो का निरंतर बरसना है । दिन नदी का रूप ले लेता है इसलिए भारत में प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने में निरंतरता रखनी होंगी तभी हम अपनी आने वाली पीढ़ी को हरित व पर्यावरण अनुकूल विरासत दे पाएंगे।

प्लास्टिक के दुष्प्रभाव को देखते हुए पूरी दुनिया तथा भारत सिंगल यूज़ प्लास्टिक को बैन करने तथा प्लास्टिक को रीसाइक्लिंग करने के कदम को मजबूती से आगे बढ़ा रहे हैं।

अतः हम सब का यह कर्तव्य है कि मानव जाति तथा जीव-जंतुओं के कल्याण के लिए प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए अपना योगदान देना चाहिए।

Written by
Anjali, PhD Scholar
J.C. Bose University of Science & Technology, YMCA